'अन्या से अनन्या' आत्म–कथा स्त्री–विमर्श का प्रामाणिक दस्तावेज

डॉ0 दीपक कुमारी
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
चौ0 बंसीलाल विश्वविद्यालय,भिवानी

शोध–सार

'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान की आत्म कथा 2007 में प्रकाशित हुई। अपनी आत्मकथा में प्रभा खेतान ने अपने जीवन में भोगे हुए यथार्थ को जीवंत दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया। आर्थिक स्वतन्त्रता को वे जीवन की पहली शर्त मानती थी। लेखिका होने के साथ–साथ वे एक सफल उद्यमी भी थी। इसीलिए उन्होंने औरत के परम्परागत रूप के सांचे को तोड़ते हुए, एक आत्मनिर्भर महिला के रूप में अपनी छवि प्रस्तुत की।

बीज शब्द– अन्या,अनन्या,आत्म–कथा,स्त्री–विमर्श,दस्तावेज

भूमिकाः– स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जिस तरह भारतीय समाज की जीवन शैली बदल रही थी,उसके साथ–साथ ही हिदी साहित्य और विशेष रूप से महिला रचनाकारों द्वारा लिखित साहित्य के मूल्य और सरोकार समाज द्वारा निर्धारित नैतिक मापदंडो से टकरा रहे थे। 1947 से आज तक अनेक लेखिकाओं ने साहित्य रचना करके समाज में स्त्री की बदलती हुई स्थिति को रेंखाकित किया है। इस दौर में महिला रचनाकारों द्वारा आत्मकथा लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ है। आज महिला रचनााकारों का आत्मकथा लेखन स्त्री–चेतना की गाथा को नये कोणों से देखने में अपनी महती भूमिका निभा रहा है।

रमणिका गुप्ता लिखती हैं कि ''आत्मकथा के माध्यम से व्यक्ति अपने भोगे हुए सच को लिखकर, समाज को आईना दिखाने की मुहिम चलाता है ताकि समाज अपनी विकृतियां देख सके।''[1]

यह मुहिम डॉ0 अम्बेडकर ने चलाई थी जब उन्होंने अनुभव किया कि सदियों से अधिकारों से वंचित, दलित, स्त्री एंव अन्य जमाते अपनी बातें रखने में असमर्थ हैं क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति की ताकत कमजोर है। उन्होंने इन जमातों को आत्मकथा लेखन का हथियार यह कह कर सौंपा कि अगर वे साहित्य नहीं लिख सकते या कम पढ़े–लिखे

होने के कारण उनमें लिखने का संस्कार नहीं है, तो जिंदगी का वह सच लिखें जिसे उन्होंने भोगा है और लोगों ने लिखना शुरू किया । दरअसल आत्मकथाओं में जो सच उभरकर आता है, वह समाज का सच होता है– उन परजीवी जमातों का सच होता है, जो समाज की विकृतियों और निमर्म व्यवस्था के कारण परजीवी बनने को विवश की गई। इसलिए स्त्री, दलित, आदिवासी या किसी कैदी व अपराधी का सच, समाज का सच होता है– व्यक्ति का नहीं। आज जब स्त्रियों ने लिखना शुरू किया है और पुरूषों के बिस्तर बदलने की कथाएँ उजागर हो रही हैं– वह भी घर की गृहणि के समक्ष अपने ही घर में दूसरी औरत को लाकर, तब औरत ने भी अपनी इयत्ता को जताते हुए अपनी देह पर अपना अधिकार जताने और खुद अपने रिश्ते अपनी पंसद से कायम करने का निर्णय लिया तो लोग तिलमिला उठे हैं।

कृष्णा सोबती की 'मित्रों मरजानी' ने तो औरत की जबान पर लगे ताले ही तोड़े थे लेकिन बाद में 'भोगे हुए सच' पर आधारित आत्मकथाओं ने समाज को आईना दिखानें की हिम्मत की। दक्षिण में कमलादास ने आत्मकथा लिखकर, तो पंजाब में अमृता प्रीतम ने 'रसीदी टिकट' लिखकर डंके की चोट पर 'आदम का वर्जित **फल** चखा' और शैतान को धता बता दिया और तभी से औरतों में 'अपराध–बोध' की गाठें ढीली पड़नी शुरू हुई। भारत की हिन्दी पट्टी में संभवतः यह पहली जर्बदस्त पहल थी।

2007 में प्रकाशित प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' कई विस्तृत अर्थों और व्यापक धरातल को अपने भीतर समाहित किए हुए है।**'अन्या से अनन्या' में दो शब्द हैं पहला अन्या–जिसका अर्थ है दूसरी तथा दूसरा शब्द–अनन्या का अर्थ है–जिसकी तुलना किसी से न की जा सके अर्थात अतुलनीय,आकर्षक,अद्वितीय,देवी पार्वती।** आज आत्मकथा लेखन के प्रचलन के कारण अनेक आत्मकथाएँ सामने आ रही हैं तो उन्हें गुणवता की कसौटी पर परखना अनिवार्य हो जाता है। कुछ रचनाकार अपने आप को बचाकर दूसरों पर हर गलत परिणाम का दोष मढ़ते नजर आते हैं लेकिन 'अन्या से अनन्या' की विशेषता यही है कि लेखिका डॉ0 **सर्राफ** या अन्य सदस्यों को दोषी न ठहराकर स्वंय अपनी नियति को समझने, जानने की कोशिश करती हैं। यह कृति उनके निजी जीवन का आख्यान

मात्रा नहीं बल्कि समूचि स्त्री जाति को यह संदेश भी है कि प्यार, प्रेम जीवन के महत्वपूर्ण अंग है लेकिन उससे भी आवश्यक है कठिन श्रम द्वारा स्वंय को साधकर अपने पैरों के नीचे जमीन तैयार करना ताकि जिंदगी का बोझ स्त्री अपने कंधे पर उठा सके।

प्रभा खेतान लिखती हैं, ''हम औरतें प्रेम को जितनी गम्भीरता से लेती हैं, उतनी ही गम्भीरता से यदि अपना काम लेती तो अच्छा रहता, जितने आँसू डॉक्टर साहब के लिए गिरते हैं, उससे कम पसीना भी यदि बहा सकूँ तो पूरी दुनिया जीत लूगी।''[2]

प्रभा खेतान भी एक इन्सान है, वे भी रोती कुढ़ती, लांछन सहन करती हैं लेकिन दोषी अकेली लेखिका नहीं है क्योंकि मौजूद पितृसत्तात्मक व्यवस्था में संबंधों की कीमत स्त्री को ज्यादा चुकानी पड़ती है। हर निर्णायक मोड़ पर डॉ0 **सर्राफ** अपने बीवी–बच्चों के साथ खड़े है। एक कामकाजी महिला के रूप में भी प्रभा खेतान ने विदेशों में मेहनत करते दृढ़ इच्छाशक्ति को आधार बनाकर उपलब्धि पाई है।

डॉ0 रोहिणी अग्रवाल की मान्यता है, ''अन्या से अनन्या' का पहला पाठ हताशा की पीड़ा और आक्रोश दोनों को एक साथ गहराता है लेकिन दूसरा पाठ अपने को सहेजकर उठने, जुझने और परिस्थितियों की कर्ता बनने की अदम्य मानवीय जिद से लबरेज हो युगीन इतिहास को रचने का उर्जस्वी बोध पाता है। अतिक्रमण की पलायनवादी मुद्रा नहीं वैचारिक क्रांति की सक्रिय भूमिका। यही इस रचना की केन्द्रीय शक्ति है।''[3]

यह बड़बोलेपन से ऊपर गहन–गंभीर विषयों के साथ उन्मुक्त आकाश तक **फैलती** आत्मकथा है। यह आत्मकथा हिंदी में प्रकाशित महिला रचनाकारो की आत्मकथाओं में विशिष्ट स्थान रखती है। परिवार के अन्दर–बाहर, हिंसा, लूट, दमन से बचनें के लिए मध्य–वर्गीय स्त्री 'घरेलू गुलामी' स्वीकारती है लेकिन संयुक्त परिवारों में भी उत्पीड़न कम नहीं, मौजूदा परिवार के सड़ते 'मनुवादी' ढाँचें को और अधिक लम्बे समय तक बचा पाना सर्वथा असंभव ही नहीं, बेहद खतरनाक भी लगता है।

विवाह–संस्था के संदर्भ में प्रभा खेतान का मानना है, ''मेरी राय में विवाह एक ओवरेटेड संस्था है। मैं इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इन्कार करती हूँ, फिर जो कुछ भी है वह मेरे और डॉक्टर साहब के बीच है, बिल्कुल हमारा निजी कोना।''[4]

सब कुछ होते हुए भी प्रभा खेतान के मन मे शादी की दबी हुई ललक अवश्य थी ताकि वे 'रखैल' शब्द से मुक्ति पा सकें। रह–रहकर उनकें मन में यह विचार आते हैं कि केवल पत्नी होनें के कारण ही डॉ0 **सर्राफ** की पत्नी सावित्री की सामाजिक हैसियत उनसे ज्यादा है। इस प्रश्न पर वे स्वंय को कचोटती हैं।

प्रभा खेतान कहती हैं कि, ''मैं क्या लगती थी डॉक्टर साहब की? मैं क्यों एसे उनके साथ चली आई? प्रितयम , मिस्ट्रेस, शायद आधी पत्नी, पूरी पत्नी तो मैं कभी नहीं बन सकती क्योंकि एक पत्नी पहले से मौजूद थी। इस रिश्ते को नाम नहीं दे पाँऊगी या फिर सीधे–सीधे उसे रखैल कहो ना।''[5]

स्वस्थ सम्बन्ध किसी भी परिवार, विवाह, समाज का आधार होते हैं। संबंधों में जुड़ाव का कारण भी भावात्मक लगाव, स्नेह–सम्मान की भावना, रिश्तों में आपसी **वफादारी** तथा अपने–अपने दायित्व को निभाना ही रिश्तों की बुनियादी नींव है। पति–पत्नी के बीच वैचारिक टकराहट, दोनों में से किसी को खींचता बाहरी दुनिया का आकर्षण, सुख–सुविधाओं के प्रति बढ़ती भोग की इच्छा, एक–दूसरे को नीचा दिखाने की होड़, जीवन–साथी से अपेक्षित मानसिक–शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति में अभाव, बढ़ते तलाकों की संख्या, पाश्चात्य देशों का प्रभाव, सकारात्मक सोच का अभाव, शादी में रजामन्दी न होना आदि अनेक ऐसे कारण हैं जो दाम्पेत्यत्रर संबंधों के पनपने के मुख्य कारण हैं परन्तु भारतीय समाज में दाम्पेत्यत्रर संबधों को अनैतिक ही माना जाता है। ऐसे संबंधों को सार्वजनिक मान्यता प्राप्त संबंधों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

प्रभा खेतान को मुश्किल यह है, ''हमारा अपराध था कि हम प्यार करते थे, वैसे ही जैसे हजारों स्त्रो–पुरूष करते हैं लेकिन इन हजारों स्त्रो–पुरूषों की शादी हो जाती है और यदि शादी नहीं होती तो वे अलग–अलग हो जाते हैं। त्रासदी तो यह थी कि न हमारी शादी हो सकती थी और न हम अलग

हो पा रहे थे। क्या इन सामाजिक मान्यताओं से पहले कोई समाज नहीं था? क्या उस समाज में स्त्रो–पुरूष के विवाहेतर सम्बन्ध नहीं हुआ करते थे।''[6]

प्रभा खेतान जानती है कि स्त्री होना अपराध नहीं है किन्तु संबंधों के निर्णायक क्षणों में नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकार कर लेना बहुत बड़ा अपराध है। प्रभा खेतान ने साामजिक मान्यताओं को नकारकर आजीवन अपने संबंधों को निभाया।

वे पत्नीत्व ,स्त्रीत्व, आदि विशेषता को पितृसत्ता का मिथक मानते हुए यह बताती हैं कि पुरूष हमेशा कमजोर स्त्री से ही प्यार करता है तथा अपने से ज्यादा सबल स्त्री पुरूष में चिढ़ पैदा करती है। प्रभा खेतान के संबंधों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि सामर्थ्य स्त्री और पुरूष में अलग–अलग नहीं होती, जो हिम्मत करके जुटा ले उसी की हो जाती है। कामकाजी महिला का संघर्ष जन्म से ही शुरू हो जाता है। पढ़ाई–लिखाई में अभिभावकों का पक्षपातपूर्ण रैवया, लड़की मात्र होने से सामाजिक सुविधाओं में कमी, पल–पल आत्मविश्वास को तोड़ती सामाजिक प्रथांए– किसी भी **सफल** कामकाजी महिला के संघर्षपूर्ण इतिहास का अभिन्न अंग है। जिसका कार्यक्षेत्र में एक **सफल** उदाहरण है– डॉ0 प्रभा खेतान। सामाजिक दृष्टि चूंकि एक बंधे–बंधाये दायरे मे सीमित रहती है इसलिए समाज डॉ0 प्रभा खेतान को निरन्तर ताने और **फ**ब्तियों से घायल करता रहता है, जबकि आवश्यकता है लेखिका के व्यवसाय में किए गए संघर्ष को देखने की। डॉ0 प्रभा खेतान ने भारतीय कामकाजी महिला की उपलब्धि मेहनत और अस्तित्व की लड़ाई को विदेशों तक पहुँचाया है। समाज **फिर** भी उनको बुरी स्त्री समझता है। लेखिका आने वाली पीढ़ी के लिए एक मिसाल और संदेश कायम करते हुए यह बताना चाहती है कि स्त्री को आँसू और भावुकता में बहने की बजाय संघर्ष का रास्ता अपनाना पड़ेगा तभी वह समाज में अपना एक अलग मुकाम हासिल कर सकती है। प्रभा खेतान दर्शन, उद्योगजगत, अर्थशास्त्र,समाजशास्त्र की गहरी समझ रखने वाली स्त्रीात्ववादी लेखिका थी। वे कलकत्ता चैम्बर **ऑफ** कॉमर्स की अध्यक्ष भी रही। यहाँ तक कि कई बार डॉ0 **सर्राफ** भी उनके व्यक्तित्व के आगे बौने नजर आते हैं।

डॉ0 प्रभा खेतान 'अन्या से अनन्या' में अपने ठोस व्यक्तित्व का परिचय दे रही हैं – ''मैंने अपने आपको बचाया हैं, अपने मूल्यों को जीवन में संजोया हैं। बार–बार टूटी हूँ पर कहीं तो चोट के निशान नहीं, दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोदें में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र मे भी एक पूरी की पूरी औरत हूँ जो जिन्दगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते हुए जी रही हूँ, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज हैं।''[7]

प्रभा खेतान के व्यक्तित्व में ईमानदारी की झलक है। उन्होंने गाँव की मारवाड़ी संस्कृति से ऊपर उठकर विदेशों तक की यात्रा तय की। वहाँ से ब्यूटी थरौपी का कोर्स करके अपना अलग व्यवसाय स्थापित किया। प्रभा खेतान ने व्यापार जगत में चमड़े का व्यवसाय स्थापित कर अपने बलबूते पर अर्थोपार्जन किया है। इस प्रकार वे दकियानूसी मारवाड़ी समाज को पीछे छोड़ते हुए बाहरी औद्योगिक दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करती हैं। प्रभा खेतान का व्यक्तित्व इस तथ्य की निरर्थकता उद्घाटित करता है कि स्त्री का जीवन तभी **सफल** होगा जब उसे पिता या पति का आश्रय प्राप्त हो। प्रभा खेतान अपने व्यवसाय की देख–रेख, प्रबंधन, विदेश–यात्रा आदि समस्त कार्य स्वंय करती हैं। वे किसी पर आश्रित नहीं है। उन्हें आभास हो चुका है कि **सिर्फ** भावना में बहने से जिन्दगी नहीं कटती बल्कि व्यक्ति के पैरों के नीचे एक ठोस आधार होना चाहिए।

वे अन्या से अनन्या में कहती हैं, ''औरत के लिए केवल प्यार ही काफी नहीं। व्यक्ति बनने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए। धन–मान, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता सभी कुछ, जीवन शुरू करने के लिए उसे भी पुरूष के बराबर जमीन चाहिए।''[8]

वे अपने प्रेम–सम्बन्ध को भी स्वतन्त्र रूप से स्वीकार करके चुनौतियों के लिए तैयार रहती हैं। जब डॉ0 सर्राफ प्रभा खेतान को साधारण स्त्री समझकर केवल भोग की वस्तु समझते हैं।

तब प्रभा खेतान उन्हें दो – टुक जवाब देते हुए कहती हैं, ''उनके हाथ से कलम छीनकर मैंने दीवार पर दे मारा, डाक्टर साहब, आप मुझे इस तरह खारिज नहीं कर सकते। मैं उन औरतों में नहीं जो अब तक आपके पास आती–जाती रहीं।''[9]

रिश्ते जब बनते हैं तो परिवार बनता है, समाज बनता है लेकिन जब वही सम्बन्ध दूरियों का कारण बनते हैं तो रिश्ते बोझ लगने लगते हैं। मन के किसी कोने में सारी उम्र बुझी हुई राख की तरह सुलगते रहते हैं।

प्रभा खेतान मारवाड़ी समाज में पली–बढ़ी हैं जहाँ माँ–बाप लड़कियों को पसन्द नहीं करते। प्रभा खेतान का अपनी माँ के साथ संबंध सामान्य माँ–बेटी का कभी नहीं रहा। बचपन में ही बेटी के लिए माँ का प्यार मृगतृष्णा की तरह बना रहा। माँ से ज्यादा दाई माँ करीब हैं। अपनी बेटी के प्रेम–प्रसंग का पता चलने पर माँ जो पलायनवादी सुझाव देती हैं। उसका वर्णन प्रभा खेतान 'अन्या से अनन्या' में करती हैं।

माँ कहती हैं, ''बेटी वहीं रह जाना, यहां लौटने की जरूरत नहीं। कोई मन–पसन्द लड़का मिले तो उससे शादी भी कर लेना।''10

प्रभा खेतान हर समय अपनी माँ से डरी – सहमी नजर आती हैं। माँ स्वंय अपने आपको असुरक्षित महसूस करती हैं क्योंकि मौजूदा पितृसत्तात्मक व्यवस्था के आगे और बाहरी समाज में होने वाले छल–कपट के समक्ष वे अपने – आपको असमर्थ पाती हैं। उन्हें लगता हैं परिवार में पुरूष का होना जरूरी हैं। परिणामस्वरूप उन्हें दिन–पर–दिन सब कुछ अपने हाथ से फिसलता लगता हैं। अंत में उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता हैं।

प्रभा खेतान का अपनी माँ के संबंध में कहना हैं, ''स्वभाव से अम्मा चिड़चिड़ी थी। वैसे अम्मा के कोध का शिकार सबसे अधिक मै होती। मुझे लगता स्त्री होना मात्र अम्मा की नजर में पाप है, एक हीन स्थिति है, गुलामों का जत्था है जो बिना मालिक के जी नहीं पाएगा।''11

प्रभा खेतान की माँ एक ऐसी माँ है जिसके लिए बेटी की स्वतन्त्रता की बजाय सामाजिक रीति–रिवाज, मर्यादाएं महत्वपूर्ण हैं। लेखिका को माँ से कोई भावात्मक सहयोग मिलने की बजाय निरन्तर उपेक्षा और कुंठा ही मिली। मन की बात न कह पाने के कारण बेटी अपनी माँ से दूर होती चली गई। यही कारण है कि प्रभा खेतान अपनी माँ से दूर होती चली गई। यह इसलिए कि प्रभा खेतान का अपनी माँ के साथ संबंध कभी भी प्रगाढ़ नहीं हो पाया। इस रिश्ते में वैसी उष्मा या

गर्माहट नहीं थी जो भारतीय समाज में माँ–बेटी के बीच पाई जाती है। सामाजिक रूप से हर व्यक्ति प्रतिष्ठा और पहचान पाना चाहता है। यह मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है क्योंकि सामाजिक दायरे में ही जीवन निर्वाह करना होता है। सामाजिक सच्चाई को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रतिष्ठा तथा पहचान बनाने के लिए व्यक्ति को अपने सिद्वान्तों पर अडिग रहना पड़ता है, निरन्तर संघर्ष करते हुए जीवन की चुनौतियों का डटकर सामना करना पड़ता है तथा अभाव दुख, दर्द, घुटन, टूटन को सहन करके स्वंय में कर्ता भाव पैदा करके, विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाकर सामाजिक स्तर पर अपनी प्रतिभा व मेधा को प्रमाणित करते हुए अपने लिए एक अलग जगह बनानी पड़ती है। प्रभा खेतान ने भी संघर्ष का रास्ता अपनाया और सामाजिक जीवन में स्वंय अपने दम पर प्रतिष्ठा व पहचान अर्जित की। प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अन्नया' एक संघर्षशील मेहनती स्त्री की आत्मकथा है।

प्रभा खेतान की त्रासदी उनके भावुक निर्णय में नहीं, निर्णय लेने को बाध्य करती अमानवीय परिस्थितियों में निहित है जिन्हें व्यक्तिक स्तर पर हर देश–काल की स्त्री अमूसन झेलती आई है।

प्रभा खेतान जीवन के हर पक्ष को स्वीकार करती हैं, ''मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैनें अपने आपकों बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में संजोया है। दुनिया के पैरो तैले रोंदी गई, पर मैं मिट्टी के लौंदे मे परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र मे भी एक पूरी की पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते हुए जी रही है, जिससे अपनी उपलब्धियों पर नाज है।''[12]

प्रभा खेतान में विरल साहस है वह साहस जो अंतत जीवन में जीवनी–शक्ति की **स्फूर्ती** भरकर उन्हें अपनों और स्थितियों के आर–पार देखने का विवेक देता है। साहस जो अपनी बुजदिली से ही जीत की भावी रणनीति बनाता है और क्षितिज को समूचा बाँध लेने से कम किसी भी समझौतो पर हस्ताक्षर नहीं करना चाहता।

प्रभा खेतान लिखती हैं, ''मैं अपने जीवन को आसुओं में नहीं बहा सकती। क्या एक बूँद आँसू में स्त्रो का सारा ब्रहांड समा जाए? किसलिए?''[13]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह आत्मकथा सामाजिक जीवन के क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं पहचान पाने के लिए किए गए स्त्री–संघर्ष का महाख्यान है। सामाजिक जीवन तथा साहित्य दोनों ही स्तरों पर यह आत्मकथा स्त्री–विमर्श की शुष्क सैद्वांतिकी को अनवरत कर्म की आस्था में पल्लवित करती स्त्री विमर्श की सशक्त पुस्तक है।

"हिंदी की चर्चित लेखिका डॉ0 प्रभा खेतान का 19 सितम्बर 2008 को देर रात कोलकत्ता के साल्ट लेक स्थित आमरी अस्पताल में निधन हो गया। एक दिन पहले ही सांस की तकलीफ के कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया था, उसी दिन आपात कालीन परिस्थितियों में उनकी बाईपास सर्जरी हुई, लेकिन उस सर्जरी के बाद उनकी स्वाभाविक हृदयागति नहीं लौट पाई, और आधी रात को उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। वे 66 वर्ष की थी और लेखन तथा व्यवसाय में पूरी निष्ठा के साथ जुड़ी हुई थी।''15

वे सशरीर हमारे बीच भले ही न हो, परन्तु अपने सृजन के कारण वे लंबे समय तक हमारे बीच रहेगी। उद्यमी होने के कारण उन्होंने दुनिया के अनेक देशों की यात्राएं की थी। कदाचित उन यात्राओं ने ही उनकी दृष्टि की दुनिया को दृष्टि विस्तार दिया। इस प्रकार यह आत्मकथा हमें संदेश देती है कि स्त्री की वास्तविक स्वतन्त्रता उसकी मानसिक मुक्ति, संस्कारों से मुक्ति, रूढ़ छवियों के पारंपरिक संजाल से मुक्ति। निःसंदेह 'अन्या से अन्नया' 'आत्म' का विसर्जन करती एक अन्या से 'आत्म' का पुनरान्वेषण, पुनर्सयोंजन और संवर्धन कर जीवन के प्रति अनन्य आस्थावान बनती स्त्री का महाख्यान है।

सन्दर्भ–सूची :–

1. संपादक– गुप्ता रमणिका – युद्वरत आम आदमी ;नई दिल्ली, जन–साहित्य का दस्तावेजी त्रौमासिक, अंक–105, अक्तूबर– दिसम्बर, 2010, पृ0 4

2. .खेतान प्रभा : अन्या से अनन्या ,नई दिल्ली–110007, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, 1–बी नेताजी सुभाष माग,' प्रथम संस्करण–2007 , पृ0–15

3.संपादकः– पंकज विष्ट ,संमयातर, जिंदा रहने की जिद, अंक जून, 2006

4.खेतान प्रभा : अन्या से अनन्या ,नई दिल्ली–110007, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, 1–बी नेताजी सुभाष मार्ग, प्रथम संस्करण–2007 , पृ0 –85

5.यथावत, पृ0 स0–8
6.यथावत, पृ0 स0–175–176
7.यथावत, पृ0 स0–29

8.यथावत, पृ0 स0–257

9.यथावत, पृ0 स0 75

10.यथावत, पृ0 स0 106

11. यथावत, पृ0 स0 37

12.यथावत, पृ0 स0 37

13. यथावत, पृ0 स0 29

14. यथावत, पृ0 स0 45

15. दैनिक जागरण, पानीपत, शनिवार, 21 सितम्बर, 2008, पृ0 7